PG आयुर्वेद प्रयोजनम्

AIAPGET | PSC | UPSC | BAMS

Volume-5

8 years of excellence

Volume 5

PG आयुर्वेद प्रयोजनम्®

India's Best Institute for AIAPGET | PSC | UPSC| BAMS

Thank You So Much For Your Trust and Support!

- माधव निदान
- शारंग्धर
- भावप्रकाश
- काश्यप संहिता

PG आयुर्वेद प्रयोजनम्®

India's Best Institute for AIAPGET | PSC | UPSC| BAMS

कौमारभृत्य

Run by

Kalp Education Social Cultural Welfare Society

PG आयुर्वेद प्रयोजनम्®

India's Best Institute for AIAPGET | PSC | UPSC| BAMS

Our Selections

•	Nikita Gupta	-	MD-Samhita Siddhant	-	Chennai
•	Sonu Chouhan	-	MD-Rog Nidan	-	PTKLS Bhopal
•	Neha Thakur	-	MD-Kriya Shareer	-	PTKLS Bhopal
•	Sarika Tiwari	-	MD-Kriya Shareer	-	PTKLS Bhopal
•	Amrita Pandey	-	MD-Rachna Shareer	-	PTKLS Bhopal
•	Rohit Parmar	-	MD-Rog Nidan	-	AIIA Delhi
•	Rushtam Mujhalde	-	MD-Swasth Vrit	-	PTKLS Bhopal
•	Varsha	-	MD-Stri & Prasuti Tantra	-	Parul University Vadodara Gujarat
•	Kayanat Siddhaqi	-	MD-Kriya Shareer	-	Pune
•	Deelip Yadav	-	MD-Samhita Siddhant	-	Bhartiya Vidhya Peeth Pune
•	Atal Singh	-	MD-Samhita Siddhant	-	PTKLS Bhopal
•	Ajay Nigwal	-	MD-Samhita Siddhant	-	PTKLS Bhopal
•	Niharika Jaiswal	-	MD-Rachna Shareer	-	PTKLS Bhopal
•	Raju Meena	-	MD-Swasth Vrit	-	PTKLS Bhopal
•	Smrita Patel	-	MD-Samhita Siddhant Siddhant		-PTKLS Bhopal
•	Tripti Nigam	-	MD-Samhita Siddhant Siddhant		-GAC Rewa
•	Vimal Yadav	-	MD-Rog Nidan	-	PTKLS Bhopal
•	Neha Purohit	-	MD-Rog Nidan	-	PTKLS Bhopal
•	Shivani Gupta	-	MD-Kriya Shareer	-	RAC Lucknow
•	Monika Patidar	-	MD-Swasth Vrit	-	PTKLS Bhopal
•	Monika Parihar	-	MD-Samhita Siddhant Siddhant		-PTKLS Bhopal
•	Chhaya Baghel	-	MD-Panchkarma	-	PTKLS Bhopal
•	Priyanka Patidar	-	MD-Stri & Prasuti Tantra	-	AIIA Delhi

- कौमारभृत्यं नाम कुमार भरण धात्री क्षीरदोषसंशोधनार्थ, दुष्टस्तन्यग्रह समुत्थानां च व्याधीनामुपशमनार्थम् ।।(सुश्रुत)
- हारीत के अनुसार–बालचिकित्सा में गर्भोपक्रम विज्ञान, सूतिकोपक्रम एंव बालरोग शमन का समावेश हैं
- काश्यपके अनुसार– ''कौमारभृत्य'' समस्त अंगो से सबसे आदि व प्रधान अंग है अग्निदेव के समान।
- अष्टांग आयुर्वेद में काश्यप ने बाजीकरण नही माना है विष – अगद को दो बार बोला है।

निरूक्तिः– कुमारस्य भरणमधिकृत्य कृतं कौमारभृत्य्।– (चक्रपाणि)।

अष्टांग आयुर्वेद में कौमार भृत्य का स्थान–

चरक	–	6th
सुश्रुत	–	5th
वाग्भट	–	2th

कौमारभृत्य के प्राचीन ग्रन्थः–

1.	बाल तन्त्र	–	कल्याण वैद्य
2.	कुमार तन्त्र	–	यामिनी भूषण ।
3.	बालकुमार तन्त्र	–	रावण ।
4.	शिशुरक्षारत्न	–	पृथ्वीमल्ल।
5.	कुमाररत्न समुच्चय	–	डॉ. रमानाथ द्विवेदी
6.	कौमारभृत्य	–	रघुवीर द्विवेदी

कौमार भृत्य संबंधी तंत्रः – कुमार तंत्र, हिरण्याक्ष तंत्र पर्वतक तंत्र, बंधक तंत्र, योग सुधानिधि ।

वय विभाजनः–

चरक के अनुसार –	बाल्यावस्था – जन्म से 30 वर्ष। मध्यावस्था – 30 से 60 वर्ष। वृद्धावस्था – 60 से 100 वर्ष।
सुश्रुत के अनुसार	1. बाल्यावस्था (जन्म– 16 वर्ष तक) – क्षीरप – 1 वर्ष तक । क्षीरान्नाद – 1–2 वर्ष (Toddler 1- 3 Year) अन्नाद – 3– 16 वर्ष।
	2. मध्यावस्था – वृद्धि – 16– 20 वर्ष। यौवन – 20– 30 वर्ष सम्पूर्णता – 30–40 वर्ष हानि – 40– 70 वर्ष
	3. वृद्धावस्था – 70– मृत्यु तक।
भावमिश्र के अनुसार	कौमार – 0–5 वर्ष। पोगण्ड अवस्था – 5– 10 वर्ष। (16 वर्ष धर्मग्रथ) किशोर – 10– 16 वर्ष।
भावप्रकाश के अनुसार	बाला – 16 वर्ष तक । तरूणी – 16 – 32 वर्ष। प्रौढा – 32– 50 वर्ष

Note:

काश्यप के अनुसार		गर्भावस्था – जन्म तक। बाल्यावस्था – 1 वर्ष । कौमारावस्था – 2 – 16 वर्ष। यौवनावस्था – 16 – 34 वर्ष। मध्यमावस्था – 34 – 70 वर्ष। वृद्धावस्था – 70 से मृत्युपर्यन्त।	
हारित के अनुसार	हारीत सर्वोत्तम आयु–	1. बाला – 0 – 12 वर्ष। 2. मुग्धा – 13 – 19 वर्ष। 3. प्रौढ़ा – 20 – 28 वर्ष। 4. प्रगल्भा – 29 – 41 वर्ष। **पुरूष में** – 25 – 50 वर्ष **स्त्रीयों में** – 24 – 37 वर्ष	
पाराशर के अनुसार		गौरी – 8 वर्ष रोहिणी – 9 वर्ष कन्या – 10 वर्ष रजस्वला – 10 के बाद	

जातमात्र :– जन्म के पश्चात् जीवन की अवस्थाओं में सबसे पहली व सबसे छोटी अवस्था।

दो भाग–

1. सद्योजात– जन्म से लेकर नाभि नाल कटने तक। Early Neonate 0-7 Days
2. नवजात– नाभिनाल कटने से दूसरे–चौथे सप्ताहांत तक। Late Neonate 7-28 Days
   जातिहार – तुरंत जन्मा बालक।

- चरक ने कुमार शब्द नवजात शिशु के लिये प्रयुक्त किया है।

नवजात शिशु परिचर्या क्रम

कमांक	चरक	सुश्रुत	वाग्भट
1.	प्राणप्रत्यागमन	उल्वा परिमार्जन	उल्वापरिमार्जन
2.	स्नान	मुख विशोधन	प्राणप्रत्यागमन
3.	मुखविशोधन	पिचुधारण	नालछेदन
4.	गर्भोदकवमन	नालछेदन	स्नान
5.	नालछेदन	जातकर्म	पिचुधारण
6.	जातकर्म	स्नान	स्वर्णप्राशन
7.	रक्षाकर्म		गर्भोदक वमन
8.			जातकर्म

Note:

1. **उल्वापरिमार्जनः**— उल्व का अर्थ जरायु लिया गया है।
चरक— नहीं बताया है।
सुश्रुत— केवल जरायु हटाने का निर्देश दिया है।
वाग्भट्— सैंधव सर्पि से ।

2. **प्राण प्रत्यागमनः**— तस्यास्तु खल्व परायाः प्रप्ततनार्थ कर्मणि क्रियमाणे जातमात्रस्यवै कुमारस्य कार्याण्येतानि कर्माणि **भवन्ति तद्यथा** – 1. **अश्मनोः संघट्टनं कर्णयोर्मूले**
2. **शीतोकेनोष्णोदकेन वा मुख परिषेक :।**
तथा स क्लेशवहितान् प्राणान पुर्नलभेत कृष्णकपालिका शूर्पेण चैनम मिनिष्पुणीयुर्यद्य चेष्टः स्याद् यावत् प्राणनां प्रत्यागमनम।—चरक।

वाग्भट्—अश्मनोर्वादनं चास्य कर्णमूले समाचरेत् , अथास्य दक्षिणे कर्णे मन्त्रमुच्चारयेदिमम्।।

3. स्नानः— ततः प्रत्यागत प्राणं प्रकृतिभूतमभिससमीक्ष्य स्नानोदक ग्रहणाभ्यमुपपादयेत।।—चरक
चरक—बालक की प्रकृति के अनुसार।
वाग्भट्ट—(विधियाँ 4)— 1. क्षीरीवृक्ष कषाय, 2. सर्वगन्धोदक, 3. रौप्यहेमप्रतप्त जल, 4. कोष्णजल
सुश्रुत— (विधियाँ 5)— 4 उपर्युक्त + 5. कपित्थपत्र कषाय से ।

4. **अभ्यंगः**— बालक को बलातैल से अभ्यंग कराये।— सुश्रुत, वाग्भट्ट।

> **सूतिका** को भी **बला तैल** से अभ्यंग एंव अनुवासन वस्ति देते है।
> **पक्षाघात** में भी **बला तैल** से अनुवासन वस्ति देते है।

5 **मुखविशोधनम्**— **ताल्वोष्ठ कण्ठजिह्वा प्रमार्जनं** आरभेताङ्गुल्यां सुपरिलिखितनखया सुक्षालितो—पधान कार्पासपिचुनत्या। प्रथमं प्रमार्जिततास्य चास्य **शिरस्तालु कार्पास पिचुनास्नेह** गर्भेण प्रति संच्छादयेत्।
1. जातमात्र के तालु—ओष्ठ—कण्ठ— जिह्वा का क्रमशः शोधन करें।— चरक
2. सर्पिसैन्धव से जातमात्र मे मुख को साफ करें।— सुश्रुत

चरक	–	तालु, ओष्ठ, कण्ठ, जिव्हा का शोधन अंगुली में कर्पास लपेटकर।
सुश्रुत	–	सैंधव, सर्पि।
वाग्भट	–	नहीं बताया है।

6 **गर्भोदक वमनः**— ततोऽस्यान्तरं सैन्धवोपहितेन सर्पिषां कार्य प्रच्छर्दनम्।

चरक	–	सैंधव, सर्पि।
सुश्रुत	–	नहीं बताया है।
वाग्भट	–	सैंधव, सर्पि, वचा।

सैंधव सर्पि	–	चरक	–	गर्भोदक वमन
	–	सुश्रुत	–	मुखविशोधन
	–	वाग्भट	–	उल्वापरिमार्जन

7 **नाभिनाल छेदनः**— नाभिबन्धनात् **प्रभृत्याष्टाङ्गुलमभि**ज्ञांन कृत्वा छेदनावकाशस्य द्वयोरन्तरयोः शनैः गृहीत्वा तीक्ष्णेन रौप्याराजतयसाना। छेदनानाम् अन्यतमेन् **अर्द्धधारेण** छेदयेत् तामाग्रे सूत्रेणोपनिबद्धय **कण्ठेस्य** शिथिलमवसृजेत्।। च.शा. 8/44

सुश्रुत— ततो नाभिनाड़ीमष्टांगुलमायम्य सूत्रेण बद्ध्वा छेदयेत ।।
नाभिनाल छेदनः— चरक, सुश्रुत, काश्यप – 8 अंगुल अष्टांग ह्रदय— 4 अंगुल।

Note: